(2)

कथा ..... अंतरंग विश्व की

(१००८ साल प्राचीन एक अनुपम कथा)

आर्षविश्व
आचार्य कल्याणबोधि

एक ऐसा माध्यम, जो सहज उत्सुकता को जन्म दे, आबालवृद्ध सर्व के रस का विषय बने, उस का नाम है कथा। अत एव अनादि काल से कथा का सातत्यपूर्ण आकर्षण रहा है। चाहे दादीमाँ की बाते हो, या सचित्र बालपुस्तक हो, नाटक का रंगमंच हो या चलचित्र का परदा हो, नोवेल बुक हो या रामायण सत्र हो, कथा का साम्राज्य सर्वव्यापी है।

यहाँ एक ऐसी कथा की बात करनी है, जो उपरोक्त सर्व कथा में व्याप्त है। जीवन की प्रत्येक घटना जिस कथा के साथ संकलन है। मेरी भी यही कथा है, और आप की भी। जिसने इस कथा को नहीं जाना, उसने कुछ भी नहीं जाना। दुन्यवी उपाधियाँ उस के लिये वास्तव में गौरव नहीं, किन्तु कलंक है।

जिस कथा में विश्वव्यवस्था एवं विश्वसंचालन का रहस्य रसप्रद विधा से प्रकट हुआ है। हम जिन जिन प्रसंगो से उत्तीर्ण होते है, उन प्रत्येक प्रसंग का जिस कथा में 'पोस्टमोर्टम' हुआ है। जिस कथा के परिशीलन के बाद समग्र जगत का आर-पार दर्शन होता है। आत्मा की पारदर्शी दृष्टि के आवरण दूर होते है... परमशांति एवं परमसुख स्वाधीन होते हैं। विश्वमैत्री की भावना हृदय में प्रतिष्ठित होती है। जीवमात्र में निहित शिवस्वरूप का साक्षात्कार होता है। परम समाधि की स्थिति सहज होती है एवं आत्मा यही जीवन्मुक्ति के परमानंद का अनुभव करती है।

उस कथा का नाम है - उपमिति भव प्रपंच कथा। जिसके लेखक है परम कारुणिक श्रमण श्रीसिद्धर्षि गणि। वि.सं. ९६२ में संस्कृत भाषा में इस कथा का सृजन हुआ है। ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन इस कथा का १००८ जन्मदिन आ रहा है। जन्मदिन उनका ही मनाने योग्य है, जिसने परोपकार किया हो, विश्व का मंगल किया हो। इस कथा ने आज तक हजारो श्रोताओ को पारदर्शी दृष्टि का दान कर के जीवन्मुक्ति का परमानंद दिया है। संक्लेशो की अग्निवर्षा से मुक्ति दे कर समाधि की सुधावृष्टि का दान दिया है।

जिस विश्व को हम देख रहे है, वह बहिरंग विश्व है, जिसकी अगम्य समस्याओ के समाधान अंतरंग विश्व में निहित है। जब तक आत्मा को अंतरंग विश्व के दर्शन न हो, तब तक वह चक्षुसहित होते हुए भी वास्तव में अंध रहती है। तीव्र बुद्धि होते हुए भी मूर्ख रहती है। अंतरंग विश्व से अपरिचित आत्मा बहिर्दृष्टि से घटनाओ का अर्थघटन एवं व्यक्तिओ का मूल्यांकन करती है। अत: चिंता, संताप, कलह, असंतोष एवं अनेक शारीरिक-मानसिक रोग एवं आत्मघात तथा दुर्गति जैसे भयानक फल को प्राप्त करती है।

उपमिति कथा आत्मा की इस अनादि के अंधत्व को दूर करती है। मानों एक दिव्य अंजन करती है, और आत्मा को अंतरंग विश्व का साक्षात्कार होता है। एक ओर अनंत गुणसमृद्धि का दर्शन होता है

तो दुसरी ओर अनंत दोषदावाग्नि दृष्टिगोचर होता है। अंतरंग दोषो में सर्व दुःखो के मूल साक्षात् होते हैं, एवं अंतरंग गुणो में सर्व सुखो की प्रापकता प्रत्यक्ष होती है। विश्व का प्रत्येक जीव वास्तव में शुद्ध स्वरूपी है। आत्मा और परमात्मा के बीच वास्तव में कोइ भी अंतर नहीं है। जैसे कुशल शिल्पी शिला में ही शिल्प का दर्शन करते हैं, उसी तरह ज्ञानी आत्मा में ही परमात्मा का दर्शन करते हैं।

एक था प्रदर्शन। लोगो ने एक अद्भुत शिल्प को घेर लिया था। जीवंत सा था वह शिल्प। लोग 'अद्भुत...अद्भुत' बोल रहे थे उसी समय उस के शिल्पी का वहा आगमन हुआ। किसी ने लोगो को उनका परिचय दिया। अभिनंदन एवं प्रशंसा की मानों वर्षा हो गया। तथापि शिल्पी की नम्रता आश्चर्यजनक था। किसी जिज्ञासु ने विस्मय से प्रश्न किया, 'आप ने ऐसा अद्वितीय सर्जन कैसे किया?' शिल्पी ने वही नम्रता के साथ उत्तर दिया - 'मैंने सर्जन किया ही नहीं.' सब की आँखो में प्रश्नार्थ है... शिल्पी ने स्पष्टता की - 'मैंने तो केवल विसर्जन किया है। शिल्प तो शिला में पहले से ही हाज़िर था, मैंने अवशेष का विसर्जन कर दिया, शिल्प स्वयं प्रकट हो गया।

अवशेष दूर हो जाये, तो शिला ही शिल्प है। दोष दूर हो जाये, तो आत्मा ही परमात्मा है। जीवन का सार्थक्य सर्जन में नहीं, विसर्जन में है। अज्ञानी समग्र जीवन को संपत्ति, साधन आदि के सर्जन में लगा देता है, और अंत में सब कुछ छोड़कर असहायतया विदा होता है। साथ में होते हैं केवल दोष। भयानक दुःखमय होता है उसका परलोक। बोये हैं नीम, तो फिर आम की आशा व्यर्थ है। ज्ञानी समझते हैं, कि विसर्जन जैसा सर्जन कोइ भी नहीं। दोषो का विसर्जन ही आत्मगुणो का सर्जन है। उपनिषदो का संदेश याद आता है - उपाधिनाशाद् ब्रह्मैव।

दोषो का विसर्जन ही दुःखो का विसर्जन है। इस के सिवा दुःख-मुक्ति का और कोइ उपाय नही है। आगमो में भी यही बात की गई है - रागस्स दोसस्स य संखएण, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं॥ कंटकी वृक्ष से प्रेम कर के काँटो की फरियाद करना व्यर्थ है, उसी तरह दोषो के साथ मित्रता कर के दुःखो की फरियाद करनी भी व्यर्थ है। आगम में कहा है - जुज्झारिहं खलु दुल्लहं। अति दुर्लभ इस मनुष्यदेह का साफल्य अंतर्युद्ध करने में है, परम पराक्रम से दोषो को पराजित कर के ज्वलंत विजय प्राप्त करने में है।

'उपमिति' इसी तत्त्व को रोचक कथा द्वारा प्रस्तुत करती है। करीब १६००० श्लोक प्रमाण यह ग्रंथ आठ प्रस्तावो में विभक्त है। एक एक प्रस्ताव आता जाता है, एक एक घटना का मानो जीवंत प्रसारण होता जाता है, और संसार का पर्दाफाश होता जाता है। मनोमंथन को अभिनव अभिनव आलंबन मिलता जाता है। हिंसा और क्रोध से हुइ नंदिवर्धन राजकुमार की दुर्दशा... अहंकार और असत्य से विपुदारण राजा ने प्राप्त किया हुआ कटु फल.... चोरी और छल से निर्मित वामदेव की दर्दपूर्ण

कथा .... काम और मैथुन से घनशेखर की बरबादी ... महामोह और परिग्रह से घनवाहन राजा का सत्यानाश ।

प्रतिक्षण उत्सुकतादायक कथा चलती रहती है, और पर्दे दूर होते रहते हैं ... एक के बाद एक ... वाचक प्रतीति करते हैं - यह तो मेरी ही बात ... मेरी ही कथा ... मैं ही नायक ... मैं ही खलनायक ... दुर्भाग्य यही, कि आज तक इसे नहीं जाना । सौभाग्य यही, कि आज यह पर्दाफाश हुआ ।

योगशास्त्र में कहा है - आत्माऽज्ञानभवं दुःखं - मात्मज्ञानेन हन्यते । दुःख का जन्म होता है, आत्मा के अज्ञान से, और दुःख का विनाश होता है आत्मा के ज्ञान से ।

शाखा एवं प्रशाखा से वृक्ष समृद्ध बनता है, उसी तरह कथा और अवान्तरकथा से यह ग्रंथ समृद्ध बना है । स्पर्शसुख की आसक्ति से 'बाल' की विडंबना दयोत्पादक है .... स्वाद की लोलुपता से हुई 'जड' की दुर्दशा सचमुच दर्दनाक है .... सुगंध के आशिक 'मंद' की यातना स्तब्ध कर देती है ... रूप के चाहक 'अधम' की दुःखकथा खतरे का निर्देश करती है ... तो संगीत के शौकीन 'बालिश' की व्यथा विचाराधीन कर देती है । संसार की अत्यन्त रागी आत्मा भी इस कथाधारा से आन्दोलित हो, तब उस का मन निर्णयबद्ध होता है, कि संसार का प्रत्येक सुख दुःख से प्राप्त होता है, वह सुख वास्तव में दुःखरूप है, और उस का परिणाम अनेकगुण दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । आगमवचन है -

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा ।

सांसारिक सुख क्षणमात्र का है, जब कि दुःख दीर्घ-सुदीर्घकालीन है ।

कथाकारने केवल नकारात्मक (नेगेटीव) बात को ही उपन्यस्त नहीं कि है, अपितु समांतर ही हकारात्मक (पोझिटीव) बात भी ऐसी विधा से प्रस्तुत की है, कि वाचक मंत्रमुग्ध हो जाये । गुणवान बनने के लिये, उस के हृदय में प्रबल अभिलाषा उत्पन्न हो जाये । उत्कृष्ट भोगसामग्री के बीच भी मनीषी की निर्विकार चित्तवृत्ति ... विचक्षण का ज्वलंत विराग .... बुधसूरि का निरुपम चरित्र ... उत्तम की अद्भुत निःसंगता और कोविद की अनासक्ति .... एक एक गुण का दर्शन भ्रामक सुख की दौड़ को स्थगित करने के लिये पर्याप्त है । उस स्रोत से आत्मा को कभी तृप्ति नही मिल सकती, जो आत्मा की भीतर से नही निकला है । हजारो ययाति - दुर्योधन - जिनकी मृगतृष्णा की प्यास में जीवनभर दौडे जाते हैं ... कस्तूरीमृग की तरह सुरभि की शोध में भटकते रहे हैं ... पर किसी को भी कुछ भी हाथ नही लगा है ... सिवा पसीना, परिश्रम और पीडा .... सुख तो भीतर है, वह बाहर कैसे मिल सकता है?

ઉપમિતિ કેવલ કથાગ્રંથ યા ધર્મગ્રંથ નહી હૈ, અપિ તુ સફલ જીવન કી શૈલી હૈ.... સુખ-શાંતિ કા રાજમાર્ગ હૈ... ઇસ જનમ ઔર જનમો જનમ કો સુખસમૃદ્ધ કરને કી કલા હૈ। કુશલ ડોક્ટર, બુદ્ધિશાલી વકીલ, ઉદ્યોગપતિ, તીવ્ર મેધાવી વ્યાપારી, અધ્યાપક ઔર આઇ.ટી. કે માસ્ટર-માઇન્ડ છાત્ર.... જિન કે પાસ ભી સમઝ શક્તિ હૈ, ઉન સબ કો હાર્દિક નિમંત્રણ હૈ... ઉપમિતિ કે અંતરંગ વિશ્વ મેં પદાર્પણ કરને કે લિયે... આપ કી બુદ્ધિ કી સાર્થકતા ભી ઇસમેં હૈ, ઔર જીવન કી સફલતા ભી।

ઇસ કે વાચન સે આપ કો હી પ્રતીત હોગા કી બાહ્ય સૃજન, સંપત્તિ, સત્તા, પ્રતિષ્ઠા સબ કુછ ન કેવલ વ્યર્થ હૈ, અપિ તુ ભયાનક ભી હૈ। એક એક પ્રસ્તાવ હૃદયગ્રન્થિ કા વિચ્છેદ કરતે જાયેંગે, મન કો દ્રવિત કરતે રહેંગે, ઔર જબ અંતિમ પ્રસ્તાવ પરાકાષ્ઠા કો પ્રાપ્ત હોગા, તબ.... થોડી ભી સંવેદનશીલતા હોગી, તો અશ્રુઓ કા બાંધ ટૂટ જાયેગા, ઔર ઉન અશ્રુઓ કી ઉષ્મા હી દોષો કો એવં દુઃખો કો વિનષ્ટ કર દેગી।

ઇસ કથા કો ઉસ કે મૂલ રૂપ મેં - સંસ્કૃત મેં - પઢ઼ને કા જો આનંદ ઔર જો અનુભૂતિ હૈ, વહ વર્ણનાતીત હૈ। તથાપિ જો સંસ્કૃત ભાષા સે પરિચિત નહીં હૈ, ઉન કે લિયે સંતો એવં સજ્જનોને ઇસ ગ્રંથ કા અનુવાદ કિયા હૈ। ઉપમિતિ વિશ્વ કા અદ્વિતીય રૂપકગ્રંથ હૈ। વિશ્વ કી અનેકાનેક ભાષાઓ મેં ઉસ કા અનુવાદ હુઆ હૈ। ગુજરાતી અનુવાદ કી પાંચ આવૃત્તિયાં ભી હો ચુકી હૈ। પશ્ચિમી વિદ્વદ્વૃંદ ઇસ કથા કી અસ્મિતા પર આફરીન હૈ, ઔર હમારી સ્થિતિ... ઘર કી મુર્ગી....

ચકો, સબ કે ગયે - આપ રહ ગયે - ઇસ સ્થિતિ સે બાહર નિકલે... આત્માર્થી બને... આત્મકથા કે અનજાનપન કા યહ કલંક મિટા દે.... બહુશ્રુત ગુરુ ભગવંત કા શરણ લે... ઇસ કથા કા રસાસ્વાદ લે, ઔર કૃતાર્થ બને।

પરમ તારક સર્વજ્ઞવચન કે વિરુદ્ધ લિખા હો, તો ક્ષમાયાચના કરતા હૂઁ

અવશેષ દૂર હો જાયે,
તો શિક્ષા હી ચિન્મય હૈ।
દોષ દૂર હો જાયે,
તો આત્મા હી પરમાત્મા હૈ।

જીવન કા સાર્થક્ય
સર્જન મેં નહીં,
વિસર્જન મેં હૈ।

ઉસ સ્રોત સે તુઝે
કભી તૃપ્તિ નહી મિલેગી,
જો તેરી ભીતર સે
નહી નિકલા હૈ।

વિશ્વ કી
એક અદ્ભુત કૃતિ કા
૨૦૦૮ વા
જન્મદિન